दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-X (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Dilkhush

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10, 11/09/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]: 1 1 3 0 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dilkhush

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) गदराने तन गोरटी, ऐपन-आड़ लिलार।

हूठ्यौ दै, इठलाइ, दृग करै गँवारि सुवार।।

निर्दिष्ट व्याख्यांश रीतिसिद्ध काव्य परंपरा के महान कवि बिहारी की एकमात्र काव्य कृति 'बिहारी सतसई' से लिया गया है जिसका संकलन पं. जगन्नाथ दास रत्नाकर ने किया है। इन ~~पंक्तियों~~ में 'बिहारी' ग्रामीण युवतियों की सुंदरता का वर्णन व हँसी-ठिठोली का चित्रण कर रहे हैं।

पंक्तियों में एक साधारण ग्रामीण परिवेश की युवती, अपने यौवन से परिपूर्ण, जिसने शरीर पर चोली ओढ़ रखी है एवं माथे पर आड़ा तिलक लगाए हुआ है। जिनसे कुछ कहने पर इठलाती है अर्थात् लज्जित हो जाती है लेकिन मन्ता में कवि ने ग्रामीण परिवेश की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस सुन्दरता का उपहासात्मक भाव में 'गँवार' कहकर संकेत किया है। अर्थात गाँवों में युवतियाँ सुन्दर होकर भी गँवारों की भाँति व्यवहार करती है।

विशेष -

① बिहारीलाल की तत्कालीन मानसिकता के तहत शारीरिक वर्णन किया गया है।

② हालाँकि नायिका ~~[illegible]~~ साधारण ग्रामीण परिवेश से लेकर 'समाहार शक्ति' का प्रमाण लेकिन 'गँवार' कहने पर भेदभाव,

③ शृंगार रस का अद्भुत वर्णन,

④ भाषा चलती हुई, लेकिन साहित्यिक अभिव्यक्ति।

⑤ 'अंग-अंग नग जगमगति, दीपशिखा सी देह' जैसा वर्णन।

⑥

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

प्रस्तुत पद्यांश, छायावादी कवि महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित ~~भावात्मक~~ लम्बी ~~महाकाव्य~~ कविता ~~'कामायनी'~~ के ~~'प्रलय सर्ग'~~ 'राम की शक्ति पूजा' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कवि ने 'राम' व 'सीता' के प्रथम मिलन के बारे में वर्णन किया है।

युद्ध की विभीषिका से व्यथित व निराशाजनक भाव में युद्ध शिविर में, समुपर्वत प्रसंग के दौरान श्रीराम का मन व्यथित हो

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उठता है। और इस निराशाजनक स्थिति में उन्हें वह स्थान याद आ गया जहाँ वे सीता से मिले थे और नयन ही नयन में सांकेतिक भाषा में बातचीत हुई थी। प्रकृति का वातावरण भी मनोरम था, फूल बनते-गिरते जा रहे थे और पक्षियों की चहचाहट मर्मस्पर्शी थी। जानकी अर्थात् सीता से वह प्रथम मिलन बिजली जैसा कंपन पैदा करने वाला था।

विशेष.

1. राम को ईश्वर नहीं ~~[illegible]~~ मानव रूप में वर्णित किया गया है।
2. बिहारी के 'कहत, नटत, रिझत, खीजत...' जैसा संवाद व वातावरण 'नयनों से नयनों का संभाषण' में दिखाई पड़ता है।
3. कहीं निराला भी अपनी आत्मकथा कह रहे हैं।
4. भाषा तत्सम प्रधान लेकिन भावानुकूल लय विद्यमान, 'शक्तिकला का उत्स' व 'आराधन से [illegible]' आदि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न ... के अतिरिक्त कुछ ... खें।
...se do not write ...hing except the ...tion number in ...space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है,
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है।
अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति-कला,
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन ही क्या भला?

प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत व दक्षिण भारत के लोगों में हिन्दी सीखने का जोश पैदा करा देने वाली कविता 'भारत-भारती' से लिया गया है जो राष्ट्रकवि 'मैथिली शरण गुप्त' के द्वारा रचित है।
इसमें प्रकृति के कालचक्र की अवधारणा को बताया गया है।

गुप्त जी प्रकृति की परिवर्तनशीलता पर बल दे रहे हैं कि समय एक चक्रीय रूप में चलता है, जिसका विकास हुआ है उसका पतन व जिसकी चक्रीय दशा है उसका उद्धार निश्चित है। जो आकाश में पहले चढ़ता है वही खाई में पहले गिरता है अर्थात् उन्नति व अवनति प्र

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के दो पहलू हैं। कला में जो उन्नति हुई, इसका दुर्भाग्य है कि यह हमारी अवनति को कह रही है, और जिसका कभी पतन नहीं हुआ उसका, उत्थान होना दिखता नहीं है अर्थात् विफलता के बाद सफलता मिलने का महत्व ही कुछ और है।

विशेष · ① राष्ट्रीय जनजागरण का काव्य है, अतीत की महानता व वर्तमान दुर्दशा से अब दुबारा महानता की ओर चलने का संदेश।

② 'अवनति कह रही उन्नति-कला' में विरोधाभास अलंकार

③ 'समय की यंत्रीय अवधारणा' की व्याख्या।

④ खड़ी बोली का काव्य में प्रयोग का सफल प्रमाण।

⑤ 'जिसका समय एक-सा रहता सदा' सुख दुख एक सिक्के के दो पहलू अर्थात् प्रकृति विरक्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

दी गई पंक्तियां ओजस्विता व तेजस्विता के कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की काव्यकृति 'कुरुक्षेत्र' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में युद्ध की विभीषिका से व्यथित 'युधिष्ठिर' को 'भीष्म पितामह', अनैतिक मामलों में युद्ध को सही ठहराते हैं।

भीष्म कहते हैं कि युद्ध को, सत्य के पक्ष में रहने वाला नहीं वरन् जो अन्याय करता है वही बुलावा देता है। अपने अधिकारों की माँग करना, स्वतंत्रता हासिल करना कोई पतन या ग्लानि का काम नहीं है।
जो पाप करते हुए, उसने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तटस्थ होकर रहते हैं उनको नरक ही मिलने वाला है अर्थात भौतिक निष्क्रियता अन्याय को बढ़ावा देती है। और जो अन्याय को युद्ध क्षेत्र में चुनौती देते हैं वे तो महान होते हैं।

विशेष -

① न्याय व अन्याय की स्पष्ट धारणा की तर्कसम्मत स्थापना।

② 'छीनता हो स्वत्व कोई, और तू त्याग-तप से काम ले यह पाप है।" पंक्तियों में भी यही भाव प्रकट हुआ है।

③ ओज गुण की प्रधानता।

④ भाषा तत्सम प्रधान लेकिन आंतरिक लयात्मकता विद्यमान।

⑤ मैथिली व सियाराम (?) युद्ध की अनिवार्यता के समान, 'दिनकर' अपनी विचारधारा का प्रतिपादन कर रहे हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ड) विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।
नित्य समरसता का अधिकार उमड़ता कारण-जलधि समान,
व्यथा से नीली लहरों बीच बिखरते सुख-मणिगण द्युतिमान।

प्रस्तुत पद्यांश 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित भावनात्मक महाकाव्य 'कामायनी' से लिया गया है। इन पंक्तियों में 'श्रद्धा', 'मनु' को देवसृष्टि के विनाश का कारण बताकर, एक नई समरसतायुक्त सृष्टि का निर्माण करने को कह रही है।

'श्रद्धा' कहती है कि इन इच्छा, ज्ञान, क्रिया की विषमता से सारा संसार ही पीड़ित है, लोग सुख-दुख के द्वन्द्व में ही उलझे हुए हैं, इनसे परे जाने की कोई कोशिश तक नहीं करता।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

और समरसता की लहर समुद्र में उठ रही है अर्थात आन्तरिक द्वन्द लगातार विद्यमान है। और इस व्यथा से परेशान लहरों के बीच कभी-कभी सुख की अनुभूति होती है अर्थात क्षणिक सुख का आभास।

विशेष

(1) सुख व दुख से परे, अर्थात आनन्द या 'प्रत्याभिज्ञा दर्शन' की स्थापना।

(2) 'समरसता की जड़ था चेतन, आनंद अखण्ड घना था' में भी यही भाव व्यक्त हुआ है।

(3) आधुनिक मनुष्य के आंतरिक द्वन्द का स्पष्टीकरण।

(4) तत्सम प्रधान, किंतु लयात्मक भाषा

(5) आज भी प्रासंगिक, व्यक्ति से लेकर वैश्विक स्तर तक।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न
संख्या के अतिरिक्त कुछ
न लिखें।
(Please do not write
anything except the
question number in
this space)

2. (क) कबीर की भक्ति-भावना के स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. (क) 'पद्मावत' अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'अन्योक्ति' व 'समासोक्ति' दो अलंकार है जिनका प्रयोग कई रचनाओं में मिलता है।

अन्योक्ति का अर्थ व्यंजना का अर्थ मुख्य व लक्षणा का गौण जबकि समासोक्ति में लक्षणा का अर्थ मुख्य व व्यंजना की भी उपस्थिति।

अर्थात् काव्य में अप्रस्तुत अर्थ विद्यमान हो तो कविता अन्योक्ति कहलाती है और प्रस्तुत अर्थ विद्यमान हो तो समासोक्ति।

साहित्यिक आलोचना के विद्वानों के बीच तर्क है कि 'पद्मावत' में सूफी काव्य के अनुरूप 'रत्नसेन' व 'पद्मावती' के माध्यम से खुदा व बन्दे के दर्शन 'तसव्वुफ' को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का बताया गया है, ~~जिसका~~ प्रमाण अंतिम भाग में बताया गया है - पद्मावती - बुद्धि का प्रतीक है, रत्नसेन - मन का, गुरु के रूप में हीरामन तोता, नागमती - दुनिया-धंधा व अलाउद्दीन - माया का प्रतीक है और यहीं से 'अन-मल-दर' की व्याप्ति होती है।

लेकिन विद्वानों का मत है कि यह भाग प्रक्षिप्त अंश है जो बाद में जोड़ा गया है।

आ० शुक्ल के अनुसार 'पद्मावत' को पढ़ते हुए, कहीं इसका दूसरा अर्थ महसूस नहीं होता, उत्तर भारत में प्रचलित ~~नागमती~~ पद्मावती और हीरामन सुए' की कहानी जैसा प्रतीत होता है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और कहीं-कहीं आध्यात्मिक तत्व संकेत मात्र के रूप में आये हैं, प्रधान तत्व बनकर नहीं।

इसी प्रकार अन्य विद्वान विजयदेवनारायण 'साही' ने भी कहा है कि 'पद्मावत' में समासोक्ति का तत्व प्रबल है, अन्योक्ति का नहीं।

समासोक्ति के तौर पर विद्यमान तत्वों में रत्नसेन चित्तौड़ का राजा, अलाउद्दीन का चित्तौड़ पर आक्रमण, पद्मावती व नागमती का जौहर करना, ऐतिहासिक घटनाएँ हैं, जायसी ने इनमें अपनी कल्पनाओं का रंग भरकर इसे 'प्रेम की रूप' के रूप में स्थापित किया है कि सूफी-काव्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की प्रेमाख्यानक काव्य के अनुरूप है।

निष्कर्ष यह है कि 'पद्मावत' समासोक्ति रचना है जिसमें अन्योक्ति के भाव कहीं-कहीं संकेत के रूप में आते हैं।"

कुछ विद्वानों ने इसे समासोक्ति व अन्योक्ति से अलग 'प्रबंध काव्य' की संज्ञा दी है।

अतः प्रेम को जीवन मूल्य व लोक वातावरण को काव्य में सहज प्रयोग के साथ, जायसी ने ठेठ अवधी में अनूठी माधुर्यपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकालीन रीतिसिद्ध काव्यधारा के महान कवि बिहारी अपनी समाहार क्षमता के लिए जाने जाते हैं।

चूंकि वे दरबारी कवि थे, व उनका कविता करने का उद्देश्य धन, यश व पुरस्कार प्राप्त करना था व चौपहीन रसिकों को आनन्द देना, अतः अपनी अनुभाव शक्ति के कारण बिहारी की कविता थोड़े से चलचित्र के समान अनुभव करा देती है।

उनकी महत्वपूर्ण पंक्तियां उनका एक ही पंक्ति में सारा विभिन्न भावों को व्यक्त करना है —

"कहत, नटत, रीझत, खीजत, मिलत, खिलत, लजियात,
भरे भौन में करत हैं, नैनहुं ही सों बात।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नायक-नायिका, लोगों की उपस्थिति के बीच भी सांकेतिक भाषा में इशारों से जो बात करते हैं, यह उनका रचना कौशल है।

बिहारी ने उनकी कविताओं में राधा-कृष्ण की [struck out] लीला में हँसी-ठिठोली को दृश्य रूप में वर्णित किया है, जिसको पढ़कर पाठक, वातावरण में रमा जाता है।

"बतरस लालच लाल की, मुरली धुरी लुकाय
सौंहनु हसे, भौंहनु कहे, नट जाय।"

राधा बांसुरी को छिपा देती हैं व कृष्ण के माँगने पर नाटकीय तरीके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ ...ें।
...e do not write ...ing except the ...on number in ...pace)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से देने से मना कर देती है।
यह पंक्तियाँ एक चलचित्र की भाँति पाठक के सामने उभार कर, सजीव चित्रण पैदा करती है।

"या गति अनुराग की समुझै नहिं कोय,
ज्यों-ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों त्यों उजल होय।"
इन पंक्तियों में तो स्पर्श-बिम्ब का भी अनुभव सा लगता है।

अतः बिहारी ने "चलती हुई भाषा को न केवल साहित्यिक रूप बल्कि बिम्बों की सघन उपस्थिति के माध्यम से अपनी काव्य कला का अप्रतिम उदाहरण दिया है।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कुरुक्षेत्र' के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

रामधारी सिंह 'दिनकर' मार्क्सवादी कवि हैं जो समाजवाद की विचारधारा से प्रभावित है।

मार्क्सवाद में 'वस्तु' अर्थात 'संवेदना' पर महत्व दिया गया है न कि शिल्प पर, शिल्प तो 'वस्तु' या 'कंटेंट' का 'उपउत्पाद' माना जाता है।

लेकिन दिनकर की कविता 'कुरुक्षेत्र' में उनकी शिल्प के प्रति सजगता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, वे कविता न केवल संवेदना बल्कि शिल्प के दृष्टिकोण से भी परिपक्व बनाने चाहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिल्प के तत्वों में प्रथम काव्य-रूप का निर्धारण आता है, कुछ विद्वानों जैसे शंभूनाथ पाण्डे के अनुसार 'कुरुक्षेत्र' 'प्रगतिवादी साहित्य / विचारधारा का महाकाव्य' है, व कुछ अन्य के अनुसार 'वस्तुपरक लंबी कविता'।

यदि समग्र रूप से देखा जाए तो 'कुरुक्षेत्र', 'विचारप्रधान लम्बी कविता' की श्रेणी में आती है जिसमें मानवता के मूल्यों व यथार्थ समस्याओं पर चिंतन किया गया है।

'कुरुक्षेत्र' में लगभग सात खण्ड है 'युधिष्ठिर पहले खण्ड के बाद से ही अनुपस्थित हो जाते हैं और दूसरे - से - पांचवें तक भीष्म पितामह का एकालाप चलता रहता है।

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिनकर' जी ने खुद यह कहा है कि कविता का 'छठा अंक' अलग करके भी पढ़ा जा सकता है।

रचनाकार की विचारधाराओं का प्रभाव, अन्यायमूलक वितरण व्यवस्था का चित्रण मिलता है— 'जब तक मनुज-मनुज का यह सुख भाग नहीं सम होगा...'

भाषा की दृष्टि से 'दिनकर' ने तत्सम प्रधान पर बल दिया क्योंकि 'ओज गुण' को जमा करने के लिए सरल।

छंद की दृष्टि से 'दिनकर' सजग कवि हैं, चार-चार पंक्तियों के छंद का प्रयोग दिखता है, लयात्मकता विद्यमान है।

अतः संवेदना के अतिरिक्त दिनकर ने शिल्प का सजग प्रयोग कर कविता को तात्त्विक हानि का अप्रतिम उदाहरण बनाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष पर प्रकाश डालिये। 20

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' द्वारा रचित लम्बी कविता 'ब्रह्मराक्षस' में कवि ने आंतरिक अन्तर्द्वन्द्व को 'ब्रह्मराक्षस' के माध्यम से व्यक्त किया है।

मार्क्सवाद की विचारधारा से संबंध रखने वाले 'मुक्तिबोध' बुद्धिजीवियों का तीन वर्ग मानते हैं - एक वे जो सकलपालीवर्ग से सम्बन्ध रखते हैं अर्थात शोषण करने में विश्वास, दूसरे वे जो तटस्थ होकर जीना चाहते हैं, जिनको स्वकेन्द्रित होकर अपने जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति करना है न कि अन्य के बारे में सोचना।
~~तीसरे~~ वर्ग में वे लोग शामिल हैं जो आत्मचेतस होने के साथ-साथ विश्वचेतस होना चाहते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अर्थात् लोगों की समस्याओं के प्रति आवाज तो उठाना चाहते हैं लेकिन अपनी वैयक्तिकता से मुक्त होना नहीं चाहते।

'मुक्तिबोध' ने इसी तीसरे वर्ग को 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' बताया है कि कैसे द्वन्द्वात्मक स्थिति के चलते ये लोग अपने ऐतिहासिक उत्तरदायित्व को निभाने से वंचित हो रहे हैं।

'ब्रह्मराक्षस' एक पौराणिक प्रतीक है जो अपना ज्ञान, अगली पीढ़ी को न देने के कारण भटकता रहता है, यही स्थिति बुद्धिजीवियों की है, वे चिंतन तो करते हैं लेकिन दैनिक जीवन में सक्रियता नहीं ला पाते और मर जाते हैं,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"दामलव बिन्दुओं के सर्वत:
पसरे हुए गणित के मैदान में
मारा गया, वह काम आया।"
"वह नौकरी में जिस तरह
अपना गणित करता रहा
और मर गया।"

इन पंक्तियों में निर्द्विप बौद्धिक चिंतन को दर्शाया गया है।

और साथ वर्ग के कुछ लोग अतिरेकवादी पूर्णता की अकल्पनीय इच्छाओं को साधना चाहते हैं जो अन्तत: असफल ही होती है।

"खूब ऊँचा एक जीना सांवला
उस अभ्यांतर निराले लोक की
एक चढ़ना औ' उतरना
पुन: चढ़ना औ' लुढ़कना ...
× × ×
अतिरेकवादी पूर्णता की ये व्यथाएँ
बहुत प्यारी हैं।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन इस आत्मसंघर्ष के समाधान, बुद्धिबोध, 'ब्रह्मराक्षस के शिष्य' द्वारा करते हैं जिसके माध्यम से वे व्यक्ति की वैयक्तिकता व भावनात्मकता को बनाये रखने के साथ-साथ विवेचेतन होने की चेष्टा करते हैं ताकि एक संयमित व ~~सम्यक~~ प्राप्त होने वाला लक्ष्य साधा जा सके।

वर्तमान समय में भी ~~बहुत~~ विभिन्न सामाजिक समस्याओं, राजनीतिक विकृतियों ने मनुष्य को घेर रखा है लेकिन ऐसी उदासीनता की वजह से लोग सक्रिय भागीदारी नहीं ले पाते और समस्याओं की गंभीरता बढ़ता हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी में निहित जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कामायनी' जयशंकर प्रसाद की रचना है। प्रसाद ने नारी पात्रों के माध्यम से अपने जीवन-दर्शन को प्रकट करने का प्रयास किया है, चाहे वह 'स्कंदगुप्त' की देवसेना हो या 'कामायनी' की श्रद्धा!

'कामायनी' की मूल समस्या 'विषमता की पीड़ा', वह विषमता जिसमें ज्ञान, इच्छा, क्रिया का अनुपात अलग-अलग होने कारण मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पा रहा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चूँकि प्रसाद, 'शुद्धाद्वैतवाद' से प्रभावित रहे हैं और समाजवाद की विचारधारा से भी ओत-प्रोत।

इस 'दर्शन' को वे 'प्रत्यभिज्ञा' दर्शन कहते हैं जो सुख-दुख से परे 'आनन्दवाद' की स्थापना करना चाहता है।

"विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान।"
पंक्ति में उन्होंने जीवन की एक समस्या को उठाया है। 'श्रद्धा' के माध्यम से वे 'मनु' को समरसता की स्थिति में लाते हैं जहाँ ज्ञान, इच्छा व क्रिया का समानुपातिक योगदान, आनन्दवाद की स्थिति पर पहुँचाता है।

"एक तत्व की प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

व
'आह! कल्पना का वह सुन्दर जगत
उतना मधुर होता'
x x x x
'समरस थे जड़ या चेतन आनंद
अखण्ड घना था।'

लेकिन 'कामायनी' में प्रसाद का आनन्दवाद पात्रों की स्थिति के अनुसार खुला हुआ दिखाई देता है न कि थोपा हुआ। यहाँ मनु को एक नई सृष्टि की रचना करनी है जो अहंकार, विषमता आदि से मुक्त हो तो 'श्रद्धा' उसे उन विषमता का समाधान बताती है जो केवल सुखदी नहीं, बल्कि उनसे भी अखण्ड आनंद तक ले जाती है।
ये पंक्तियाँ राष्ट्रीय स्वाधीनता के परिप्रेक्ष्य में भी साकार थीं और आज भी प्रासंगिक बनी हुई हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राम की शक्ति पूजा' महाप्राण व्यक्तित्व वाले कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला द्वारा रचित है, इसमें विभिन्न उद्देश्यों जैसे सीता की मुक्ति, शक्ति की नयी मौलिक कल्पना, निराला का आत्म संघर्ष, व राष्ट्रीय-आंदोलन का वातावरण को विद्वानों ने अभिव्यक्त किया है।

राष्ट्रीय-स्वाधीनता आंदोलन के समय जब 1936 के आस-पास भारत के स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा लिये गये बड़े-बड़े कदम फेल हो गये, महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक आधारित तीनों सत्याग्रह यथा असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंदोलन आदि असफल होते हुए दिखाये ~~को~~ दिए, सत्ताधारी अंग्रेजों की ~~[illegible]~~ शक्ति बढ़ती गयी। अतः एक दृष्टिकोण से यह निराशाजनक भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष की कहानी को व्यक्त करती है।

अंग्रेजों ने भारत पर अन्याय किया फिर भी शक्ति ने उनका ही साथ दिया है - 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति,'

लेकिन इसी बीच कुछ ही ~~[illegible]~~ साल बाद 'भारत छोड़ो आंदोलन' को गांधीजी की 'वह एक और मन राम का जो न थका'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बताया गया है व आशावादी होकर पुनः संघर्षरत होने का आह्वान किया। राम- भारतीय संघर्ष व रावण- दमनकारी सत्ता का प्रतीक बताया है।

"होगी जय, होगी जय! हे पुरुषोत्तम नवीन।"
यही संदेश देता है कि एक बार फिर से आशावादी होकर, संघर्ष करो भारत की मुक्ति अवश्य होगी।

निराला ने भारतीय जनमानस में एक नवीन ऊर्जा का संचार किया जिससे नव-दृष्टिकोण व नये- उद्देश्य के साथ भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हो सकी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से लिया गया है, जिसकी रचना फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने की। इन पंक्तियों में 'प्रशान्त' व 'कमला' संवाद के माध्यम से, गरीबों व अमीरों के बीच पनपती खाई व नौकरशाह दृष्टिकोण को दिखाया गया है।

कमला कहती है कि गरीब लोगों की समस्याओं पर कोई ध्यान नहीं देता, जिसके पास धन है उसका सब आदर-सम्मान करते हैं, यहाँ तक पैसा हो तो सब सांस्कृतिक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तत्व भी विक्रय-क्रय की वस्तु बन जाते हैं, जैसे शिक्षा व सेवा इत्यादि।

अर्थात् धनआच्छादित सभ्यता के प्रति शिक्षित नौकरशाह भी झुकने लग गये हैं।

विशेष -

(1) गरीबों व अमीरों के प्रति अलग-अलग व्यवहार, नौकरशाह की चापलूसी को दर्शाता है।

(2) 'रेणु' की समाजवादी विचारधारा साफ झलकती है।

(3) धन के सामने निःस्वार्थ सेवा का कोई महत्व नहीं, जिसे डॉ. प्रशांत अपना धर्म समझता है।

(4) ऐसी ही बात 'गोदान' में दिखती है, जहाँ पंचायत में धन के बदले न्याय भी बिक जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है, इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिये अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन किये रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। इस अनुभूति-योग के अभ्यास के हमारे मनोविकार का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।

प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी साहित्य की निबंध शैली के लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकार आ० शुक्ल के 'कविता क्या है' निबंध से लिया गया है जो 'चिंतामणि' में संकलित है।

शुक्ल जी यहाँ कविता के महत्व को प्रतिपादित कर रहे हैं और उसकी तर्कसम्मत सैद्धांतिक अवधारणा को स्पष्ट कर रहे हैं।

कविता मनुष्य को अपने स्वार्थों से ऊपर उठाती है, और लोक-जनता के साथ जोड़ती है। कविता ही मनुष्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को उस चीज की अनुभूति कराती है जिसके लिए मनुष्य ने भक्तिया अर्थात् हृदय की प्रकृत दशा की अवस्था।

कविता की भावात्मक संबंधों की वाहक है।

विशेष :

① कविता के महत्व का प्रतिपादन
'आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा व हृदय की मुक्तावस्था रसदशा'

② कविता को 'भावयोग' की संज्ञा दी गई है जो 'कर्मयोग' व ज्ञानयोग के समकक्ष है।

③ सूत्र शैली का प्रभावपूर्ण प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है। इस कठोर प्रत्यक्षवाद की समस्या बड़ी कठिन होती है। गुप्त-साम्राज्य की उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ उसका दायित्व भी बढ़ गया है; पर उस बोझ को उठाने के लिये गुप्त-कुल के शासक प्रस्तुत नहीं, क्योंकि साम्राज्य-लक्ष्मी को वे अब अनायास और अवश्य अपनी शरण आनेवाली वस्तु समझने लगे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नाटक के सम्राट जयशंकर प्रसाद द्वारा कृत 'स्कंदगुप्त', से लिया गया है।

इन पंक्तियों में पर्णदत्त, स्कंदगुप्त को सुझाव देते हैं कि देश को चलाना कोई दार्शनिक या कल्पना का कार्य नहीं है जो बैठे - बैठे चल जाएगा।

बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि व पागलों की विस्मृति चाहने वाले स्कंदगुप्त को अपने उत्तरदायित्व से हटो देकर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सेनापति पर्णदत्त ने यह कथन प्रेरित ताकि गुप्त साम्राज्य पर बढ़ते हुए आक्रमण को रोका जा सके और फिर से एकता स्थापित की जा सके। कोई भी स्वयं चलकर अपनी गोद में नहीं आती, संघर्ष व उत्तरदायित्व निभाने होते है।

विशेष -

① उत्तरदायित्व निभाने का भाव प्रकट हुआ है।

② राजाओं के लिए सन्यास लेना वांछित नहीं बताया है।

③ संवाद योजना, विरामचिन्हों के सफलता कुशल प्रयोग से पठनीय व रोचक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) दिव्यो, मैं मृत्यु से भय नहीं मानता...मृत्यु क्या है? अस्तित्व का अन्त! जिसका अस्तित्व नहीं, जिसे अनुभूति नहीं, वह भय भी अनुभव नहीं कर सकता। भय है जीवित रह कर पीड़ा और पराभव सहने में, भय है जीवन भर की पीड़ा और पराभव से। तुम्हें अंक में लेकर समाप्त हो जाने से कौन इच्छा अपूर्ण रह जायेगी? फिर उसमें भय क्या? वह सुखद अस्तित्व का सुखद अन्त है परन्तु मैं युद्ध में पराक्रान्त होकर, पराभूत होकर जीवन भर तिल-तिल कर मरने की कल्पना सहन नहीं कर सकता। जीवन की सार्थकता अधिकार और सामर्थ्य में ही है।

प्रस्तुत गद्यावतरण मानवतावादी उपन्यासकार 'यशपाल' द्वारा रचित 'दिव्या' से लिया गया है।

इसमें नारी की पराधीनता, वर्ण-व्यवस्था के चलते भेदभाव व इहलोकवाद व परलोकवाद के अन्तर्द्वन्द्व को बताया गया है।

इन पंक्तियों पृथुसेन, दिव्या से प्रेम करता है और अपने पिता 'प्रेस्थ' के द्वारा समझाये जाने पर भी वह युद्ध से ऊपर 'दिव्या' को पाना चाहता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इसमें मृत्यु को ~~अर्थ~~ ~~अस्तित्व~~ निडर मृत्युमेन, युद्ध में हारकर मरने की बजाय, 'डिल्ला' के साथ क्षणभर जीकर मरने का अपना सार समझता है।

विशेष -

(1) "मृत्यु क्या है? .. अस्तित्व का अन्त।" सूत्रशैली के साथ, मृत्यु की मौलिक व्याख्या।

(2) मृत्युमेन को जीवन का महत्व अपने प्रेम को पाकर उत्तरदायित्व निभाना है।

(3) मृत्यु से ज्यादा भय पराभव या जीवनभर की परतंत्रता से।

(4) संवाद-शैली परस्पर गुंफित

(5) भाषा तत्सम रोडित संप्रेषणीय।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पर प्यार की बेसुध घड़ियाँ, वे विभोर क्षण, तन्मयता के वे पल, जहाँ शब्द चुक जाते हैं, हमारे जीवन में कभी नहीं आये। तुम्हीं बताओ, आये कभी? तुम्हारे असंख्य आलिंगनों और चुम्बनों के बीच भी, एक क्षण के लिये भी तो मैंने कभी तन-मन की सुध बिसरा देने वाली पुलक या मादकता का अनुभव नहीं किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ नयी कहानी संकलन 'राजेन्द्र यादव' द्वारा एक 'दुनिया समानांतर' से ली गई है।

पंक्तियों में लेखक ने नायिका के माध्यम से आधुनिक संबंध बोध की निरर्थकता को व्यक्त किया है। नायिका कहती है कि उसने कभी ऐसे क्षण महसूस नहीं किए जहाँ उसे लगा कि प्रेम का भी जीवन में महत्व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होता है। इस शारीरिक सुख में मैंने कभी अप्रतिम आनंद अनुभव नहीं किया।

शिल्प -

(1) प्रेम का आधुनिक संबंधों में महत्व।

(2) आनन्द क्षण की अनुपस्थिति निरर्थकता बोध को इंगित।

(3) नारी पात्र द्वारा ऐसा ~~कहलवाना~~ साहसिक बोल्ड लेखन को दर्शाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लिखे गये उपन्यास, हिन्दी साहित्य के संभवत: पहले आँचलिक उपन्यास में फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने इसकी प्रस्तावना में ही कहा है -

"कथानक है ~~[illegible]~~ पूर्णिया - - -, वहाँ ~~[illegible]~~ स्थित एक मेरीगंज गाँव का - - -, लेकिन इस गाँव को भारत के पिछड़े हुए गाँवों का प्रतीक मानकर लिखा गया है।"

'मैला आँचल' उपन्यास गाँव में जिन-जिन समस्याओं का वर्णन किया गया है वह लगभग भारत के सभी गाँवों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का यथार्थ है।

मठ में 'लछमी' व 'रामपियारी' के साथ महंतों द्वारा यौन शोषण करना, धार्मिक भ्रष्टाचार को दर्शाता है जहाँ लोग धर्म के नाम पर शोषण करते हैं, लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करते हैं।

'खोतकी काका' तीन पत्नीयाँ ~~से~~ को खो चुके हैं उनमें से दो की मौत ~~[illegible]~~ अंधविश्वास के चलते, इलाज न कराने के कारण हुई है, व मलेरिया की बीमारी के लिए खुद डॉक्टर को ही जिम्मेदार ठहराते हैं। यह स्थिति मेरीगंज में ही नहीं एवं ना ही 'खोतकी काका' ~~[illegible]~~ हर गाँव में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुरुष सत्तात्मक व अंधविश्वासों में फँसकर महिलाओं के अधिकारों का हरण कर रहे हैं।

मैला आँचल में जमा (तिसरी सन्तत) सामन्तवाद व महाजनी प्रथा का प्रचलन जिसके चलते लोग सूद की पीड़ा से परेशान है, व जमींदारों के जमीन हड़पने से खेतीहीन होकर दरिद्र जीवनयापन कर रहे हैं।

लगभग भारत के सभी गाँवों मे छोटे व सीमांत किसान 85 प्रतिशत हिस्सा रखते हैं जिनके पास दो हैक्टेयर से भी कम जमीन है। स्वतंत्रता के बाद भी यह दुष्प्रथा की निरंतरता व्यवस्था पर सवाल उठाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा राजनीतिक अपराधीकरण, डॉ. प्रशान्त जैसे सेवाभाव रखने वाले व्यक्ति को साथ न देना, इत्यादि गाँव के लोगों में समस्या बनी हुई है, यथास्थितिवाद को छोड़कर आधुनिक विज्ञान व शिक्षा का अभाव भी एक ओर चुनौती है। बालविवाह, बावनदास जैसे युवकों की निराशा आदि।

अतः ये सारी समस्याएँ सभी गावों में मिलती है जो कि 'रेणु' का यह कलात्मक यथार्थ है कि उन्होंने मेरीगंज को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर सारी समस्याओं को उजागर किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रंगमंचीयता के धरातल पर 'भारत-दुर्दशा' और 'स्कंदगुप्त' की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाटक हिन्दी साहित्य की ऐसी विधा जिसे पाठक पढ़कर भले ही रसास्वादन कर ले लेकिन जब तक उसका सफल रंगमंच नहीं हो, वह पूर्णता को प्राप्त नहीं करता।

रंगमंचीयता की दृष्टि से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत भारत-दुर्दशा की संभावनाओं व सीमाओं का विश्लेषण -

संभावनाओं के तौर पर पात्रों की कमी, व केवल पाँच अंकों की उपस्थिति, दृश्यों का स्पष्टीकरण जैसे, पहले श्मशान घाट का चित्रण, कुत्ते, सियार, हड्डियाँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मिरिगा हाल का चित्रण आदि। नेपथ्य के भीतर से आवाज़ आना इत्यादि 'भारत-दुर्दशा' की रंगमंचीयता की खामियों को दर्शाता है।

लेकिन लम्बे एकालाप स्वगत कथन, भारत-दुर्दैव, भारत-भाग्य आदि द्वारा व लम्बे गीतों की उपस्थिति इसकी कुछ सीमाएँ फिर भी कई बार इसका सफल मंचन हो चुका है और हो रहा है।

जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त'

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की भाषा तालमी, लगभग 32 अंकों की उपस्थिति व पात्रों की अधिकता रंगमंच हेतु चुनौती प्रदान करती है।
लेकिन प्रसाद की धारणा 'नाटक के लिए रंगमंच, न कि रंगमंच के लिए नाटक' ने इसका सफल आयोजन किया, बशर्ते संसाधनों का जुगाड़।

'भारत-दुर्दशा' का रंगमंचन साधारण संसाधनों व आसानी से जबकि स्कंदगुप्त का तालमी व आधुनिक संसाधनों व ज्यादा परिश्रम के साथ संभव है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दलित-जीवन-चित्रण की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद का कहानी लेखन आदर्शवाद के केंचुल से उतरकर यथार्थवाद की ओर अग्रसर होता है, इस दौर की कहानी सद्गति है।

इसमें 'दुखी चमार' के माध्यम से प्रेमचंद ने दलितों के प्रति भेदभाव, ब्राह्मणवाद की बुराई व बेगारी की समस्या को उजागर किया है।

'दुखी चमार' कहता है "वो पवित्र होते है ब्राह्मण, इनके घर में प्रवेश करना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पाप है × × × ब्राह्मणी आटा का ढुकड़ा ~~उसके~~ सिर पर फेंक देती है ~~[illegible]~~ तब भी दुखी स्वयं को ही दोषी ठहराता है"।

~~यह~~ ~~[illegible]~~ ब्राह्मणव्यवस्था पर चोट है।

एक अल्प पात्र 'दया' के माध्यम से प्रेमचंद ने कहानी में पहली बार दलित ~~संघर्ष~~ की चेतना को उभारा है।

प्रेमचंद ने सामाजिक मनोविज्ञान कर दलितों की समस्याओं को हूबहू उभारा है, जो कि आगे चलकर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साहित्य में दलित-विमर्श की 'स्वयंवेदना' आधारित लेखन कला की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

'सद्गति' के अन्त में 'दुखी चमार' की लाश को कौओं, गिद्धों व कुत्तों द्वारा नोच-नोचकर खाना, न केवल सामाजिक-ऐतिहासिक भेदभाव बल्कि नंगे यथार्थ की नग्न अभिव्यक्ति को दर्शाता है। ~~जिसकी~~ ~~और~~

'सद्गति' प्रेमचंद के यथार्थवादी दौर की कहानियों में से 'कफन' व 'दूध के दाम' की चुनौती देने वाली कहानी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'गोदान' अपने समय का ही नहीं, आनेवाले समय की भी प्रसव-गाथा है।'- इस मत का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation